International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 300-304

काव्यकार रुपदेवगुण के काव्य में स्त्री–विमर्शः एक विवेचन

नीलम कुमारी
शोधार्थी (हिन्दी–विभाग), एम.डी.यू., रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

जिस कुंठा, उत्पीड़न को लेकर आधुनिक कविता रही है और आधुनिक परिप्रेक्ष्य को समेटने के प्रयत्न में वह दिनों दिन वैचारिक बौद्धिकता की शिकार बनती जा रही है, श्री रूपदेवगुण के काव्य की रचनाएँ प्रायः इससे मुक्त हैं। इनकी कविताओं में जहाँ महानगरीय जीवन की घुटन तथा आधुनिक परिवेश उभर कर सामने आये हैं वहाँ मानवीय संवेदनाएँ, निजि भावुक क्षणों का आंकलन और कवि के व्यथ्य में जन्म लेता दार्शनिक पक्ष उभर कर सामने आया है। उन्होंने अपने काव्य में जीवन और जगत के हर क्षेत्र में लेखनी चलाई है। उनकी कविताएँ जहाँ हमें 'भूत' से अवगत कराती हैं, वहाँ वर्तमान में सहचरी तथा भविष्य में मार्गदर्शिका की भूमिका निभाते नजर आती हैं। कवि समसामयिक मूल्यों के प्रति सजग रहा है और उनके काव्य में राष्ट्र–भक्ति को विशिष्ट स्थान मिला है। वे पाठक को अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा एवम् जागरूक रखना अपना अनिवार्य धर्म मानते हैं। यही कारण है कि उनकी कविताओं में कर्तव्यपालन से जीवन में नियमबद्धता परिलक्षित होती है और उनकी कविताएँ हमें स्वार्थी व संकीर्ण मान्यताओं से ऊपर उठकर विश्व बन्धुत्व व मानवता का संदेश देती हैं।

रुपदेवगुण के काव्य में स्त्री–विमर्श :– रूपदेवगुण प्रेम के प्रोषक हैं, लेकिन उनका प्रेम सात्विकता से ओत–प्रोत है। चाहे मानवीय प्रेम हो या फिर प्रकृति प्रेम, कवि की व्यक्तिगत अनुभूति का आधार रहा है। मानवीय प्रेम के अन्तर्गत उनकी प्रेम भावना में भाई–बहन का प्रेम, दाम्पत्य प्रेम, मैत्री प्रेम के भाव प्रमुख रहे हैं। आज अंधाधुंध पश्चिमीकरण, पूँजीवादी सभ्यता, वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति, भ्रष्ट राजनीति, बढ़ती हुई स्वार्थपरता ने मानवीय मूल्यों को संक्रमित, विघटित व नष्ट–भ्रष्ट कर दिया है। कवि ने विघटित हुए मानवीय मूल्यों को सुरक्षित रखने के लिए अपनी कविता को आधार बनाया है तथा भारतीय संस्कृति के प्रति अथाह प्रेम प्रकट किया है। गिरते मानवीय मूल्यों के कारण संबंधों में खोखलापन पनप रहा है। माता–पिता, भाई–बहन, पत्नी–पुत्री आदि सारे के सारे संबंध स्वार्थों की दीवार पर टिके हुए हैं। कवि ने अपनी कविताओं में प्रेम, वात्सल्य, श्रद्धा, विश्वास, सहयोग तथा संरक्षण जैसी संवेदनाओं के माध्यम से पारिवारिक संबंधों को जोड़ने का प्रयास किया है। आर्थिक विषमता के कारण आई आपसी संबंधों में दरार को भरने का काम किया है।

इसी प्रकार जब हम रूपदेवगुण के काव्य में 'स्त्री–विमर्श' की बात करते हैं तो रूपदेवगुण की सोच स्त्री प्रति हमेशा से श्रद्धामयी रही है। स्त्री चाहे माँ हो या पत्नी हो, बहन हो, पुत्री हो या फिर सहचरी हो कवि ने स्त्री के हर रूप को बड़ी सजीवता से अपने कविताओं में अभिव्यक्ति प्रदान की है। कवि ने स्त्री को परिवार की धूरी बताया है जो हर स्थिति में अपने परिवार के अस्तित्व को बनाये रखने में प्रयासरत है। विषम परिस्थितियों में भी वह डोलती नही है। उसका स्नेह, वात्सल्य, ममत्व, श्रद्धा भाव उसे आत्म सम्मानी बनाता है। स्त्री अपना सर्वस्त्र त्याग कर भी पारिवारिक मान–मर्यादाओं का पालन करती है। तथा अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह पूरी लग्न, मेहनत से करती है। रूपदेवगुण के काव्य–संग्रहों में स्त्री–विमर्श विवेचन इस प्रकार हैः–

(क) 'तुम झूठ मत बोला करो' काव्य संग्रह में स्त्री–विमर्श

प्रस्तुत काव्य–संग्रह की कविताओं में हमें पारिवारिक सम्बंधों की झांकी प्रस्तुत होती है। कवि ने माता–पिता, भाई–बहन, पुत्र–पुत्री, पति–पत्नी, आदि के सम्बंधों को सफल अभिव्यक्ति दी है। भौतिक चकाचौंध के कारण आपसी सम्बंधों में वैर, ईर्ष्या, क्रोध, स्वार्थ जैसे भाव पनपने लगे हैं जो हमारे जीवन मूल्यों का पतन करने पर तुले हुए हैं। आज रिश्ते–नाते, आपसी सम्बन्ध मात्र लोक दिखावे के रह गये हैं। कवि ने इन गम्भीर विषयों को अपनी रचनाओं में उकेरा है। कवि ने एक स्त्री को माँ, पत्नी, बहन, बेटी, प्रेमिका आदि के रूपों में चित्रित किया है। माँ के प्रति कवि का हमेशा से लगाव रहा है क्योंकि कवि जब चार वर्ष का था तो माता का देहान्त हो गया है। माँ का चेहरा कवि सही ढंग से देख भी नहीं पाया था। यही कारण है कवि को माँ की कमी सारी उम्र खली है। जिसकी भरपाई करने के लिए उन्होंने कविता का सहारा लिया। रूपदेवगुण अपनी कविताओं के प्रारम्भ में सरल सी बात करते हैं किन्तु अंत में वही बात गूढ़ रहस्य की तरफ मुड़ जाती है। सीढ़ियों से छत तक जाने की सरल सी बात करते–करते वे पूरी जिन्दगी को उसमें समेटने की कोशिश करते हैं। उन्हें मन की अभिव्यक्ति के सामने यह उम्र बहुत छोटी लगती है। उन्हें चिल्ला–चिल्ला कर मरने से घुट–घुट कर मरना ज्यादा खतरनाक लगता है। आलोच्य काव्य–संग्रह की कविताओं में स्त्री–विमर्श इस प्रकार है–

(i) 'तुम झूठ मत बोला करो' :– 'तुम झूठ मत बोला करो' शीर्षक कविता पति–पत्नी के मधुर सम्बन्धों का सफल दस्तावेज है। पति–पत्नी जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं जो सम्पूर्ण जीवन की घटनाओं को मिलकर ढ़ोते हैं। दोनों का सम्बन्ध आत्मीयता का होता है। दोनों एक दूसरे के सुख–दुःख में बराबर के भागीदार होते हैं। दोनों के सम्बन्धों की मिठास परिवार के जीवन को खुशियों से भर देती है। पत्नी परिवार का केन्द्र बिन्दू होती है। वही सारे परिवार को एकता के सूत्र में बाँधे रखती है। उसका स्नेह, वात्सलय, ममत्व, त्याग, सहनशीलता, श्रद्धाभाव ही उसे 'देवीरूपा' के पद पर आसीन करता है। वह अवने कर्त्तव्यों का निर्वाह पूरी लगन से करते हुए आत्मिक सुकून प्राप्त करती है। स्त्री जहाँ ससुर पक्ष की जिम्मेदारियों को बड़ी सजीवता से निभाती है वहाँ मायके वालों के प्रति उसका स्नेह व आदर और बढ़ जाता है। यह दोहरा

सम्मान ईश्वर ने सिर्फ स्त्री को ही बख्शा है। प्रस्तुत कविता में पत्नी अपने मायके जाते हुए अपने पति से कहती है–

''मैं कुछ ही दिनों में
लौट आऊँगी।
x x x x x x
आखिर मायके के
फर्ज को निभाना है।''[1]

उपरोक्त पंक्तियों में एक पत्नी मायके के प्रति फर्ज निभाना अपना दायित्व समझती है।
प्रस्तुत कविता में एक अन्य स्थान पर पत्नी के मायके चले जाने पर पति के जीवन के खालीपन को कवि ने बड़ी सजीवता से व्यक्त किया है–

सब कुछ साथ ले गई हो
ढ़ेर सारा प्यार
हँसों का चमकता तार
कहकहों का अम्बार
भोजन की मिठास
मिलन की आस
जीने का अहसास।''[2]

इस प्रकार प्रस्तुत कविता में प्रदर्शित होता है कि स्त्री के बिना पुरूष को अपना जीवन अर्थहीन लगता है। स्त्री से ही पुरूष के जीवन में खुशीयाँ व हर्षोल्लास छाया रहता है।

(ii) आपके बगैर बहुत उदास है ः– 'आपके बगैर बहुत उदास है' शीर्षक कविता डबवाली में हुए भयंकर अग्निकांड का मार्मिक व हृदयस्पर्शी चित्र प्रस्तुत करती है। डबवाली अग्निकांड एक ऐसा दर्दनाक अग्निकांड था जिसमें भिन्न–भिन्न स्कूलों के विद्यार्थी, बच्चे, माँ–बाप, बूढ़े,–बुजुर्ग सैंकड़ों लोग भयंकर अग्नि में जलकर मर गए थे।
आयोजकों व प्रशासन की लापरवाही के कारण यह अग्निकांड इतना भयंकर था कि इसकी लपटें आज भी हमारे मनः स्थल पर अंकित हैं। न जाने कितने घरों के चिराग बुझ गए थे।
ऐसे दर्दनाक हादसे को याद करके आज भी हमारी रूह काँप उठती है। प्रस्तुत कविता में एक पिता अपनी जिद पकड़ी बेटी को कार्यक्रम देखने जाते हुए कहता है कि बेटी तुम स्कूल जाओं मैं तुम्हारे लिए वहाँ से गुड़िया ले कर आऊँगा। लेकिन वो पिता भी अग्निकांड का शिकार बन गया। अपने पिता को याद करते हुए एक बेटी की व्यथा इस प्रकार है–

''पापा कितने दिन हो गए हैं
न आप आए, न गुड़िया ही लाए.........।''[3]

पर अफसोस बेटी को क्या पता था कि उसका पिता हमेशा–हमेशा के लिए उसकी आँखों से ओझल हो गया है। एक अन्य स्थान पर वह पुनः अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहती है–

''ऐसा मजाक नहीं किया करते पापा
अच्छा न लाना गुड़िया
पर लौट तो आओ
आपकी गुड़िया आपके बगैर बहुत उदास है।''[4]

इस प्रकार प्रस्तुत कविता डबवाली अग्निकांड में मारे गए एक पिता की बेटी की मार्मिक व्यथा, चित्कार, रूदन, मासूमियत को उजागर करती है।

(ख) 'धूप मुझे है बुला रही' –काव्य संग्रह में स्त्री–विमर्श
प्रस्तुत काव्य–संग्रह की कविताओं में कवि ने पहाड़, समुद्र, नदी, बादल, वृक्ष, फल–फूल, पक्षी, सर्दी, गर्मी आदि समस्त प्रकृति के उपादानों पर अपनी लेखनी चलाई है। प्रकृति से कवि को बचपन से विशेष लगाव रहा है। शैशवास्था में माँ के गुजर जाने के बाद रूपदेवगुण जी को प्रकृति में ही ममत्व दिखाई देगा। वह प्रकृति को विभिन्न दृष्टियों से निहारता, उससे वार्तालाप करता। कवि ने प्रकृति चित्रण आलम्बन व उद्दीपन दोनों रूपों में प्रकट किया है। प्रकृति का सबसे ज्यादा वर्णन मानवीकरण के रूप में किया है। क्योंकि कवि घण्टों–घण्टों प्रकृति की ओट में बैठकर प्रकृति के उपादानों से वार्तालाप करता है। उनसे अपना सुख–दुःख सांझा करता है। संक्षेप में कहें तो प्रकृति कवि को अपनी सहचरी के रूप में दिखाई देती है। प्रस्तुत काव्य–संग्रह में कवि ने प्राकृतिक उपादानों के माध्यम से स्त्री–विमर्श का विवेचन इस प्रकार किया है–

(i) तुम अपना रखो ख्याल :– 'तुम अपना रखो ख्याल' शीर्षक कविता में नदी कवि को अपनी माँ की प्रतिछाया की रूप में दिखाई देती है।
मानव जाति के लिए माँ का दर्जा भगवान से भी बड़ा होता है। माँ की ममता के आगे संसार के सारे सुख बेकार लगते हैं। माँ की गोद का सुकून आदमी की पीड़ा, दु'ख–दर्द सब को मिटा देता है। लेकिन जिनको माँ का प्यार नसीब नहीं होता उन्हें सारी उम्र माँ की कमी खलती रहती है। प्रस्तुत कविता में भी कवि को अपनी माँ का विछोड़ा बचपन से ही सहना पड़ता है। कवि जब चार वर्ष का था तो उसकी माँ हमेशा–हमेशा के लिए चिर निद्रा में लीन हो गई। माँ की ममता, स्नेह वात्सल्य की कमी को कवि आज भी महसूस करता है। माँ की मृत्यु के पश्चात् कवि ने प्रकृति की गोद में चला गया। प्रकृति उपादान–नदी–पहाड़, पेड़–पौधे, फल–फूल, पशु–पक्षी आदि कवि के लिए माँ की कमी को पूरा करते हैं। प्रस्तुत कविता में कवि अक्सर नदी के किनारे बैठकर नदी से बातें किया करता है। कवि को नदी उसकी माँ का प्रतिरूप दिखाई देती है तभी तो कवि लिखता है–

मैं जैसी भी हूँ, बहुत ठीक हूँ,
तुम अपना रखा करो ख्याल
मेरी माँ जो मेरे बचपन में
मुझे छोड़ कर चली गई थी
इस जहाँ से लगता है वो नदी बनकर
फिर आ गई है मेरे जीवन में।''[5]

इस प्रकार प्रस्तुत कविता मानव जीवन में माँ की महत्ता को चित्रित करती है। माँ सर्वगुण सम्पन्न सृष्टि की एक ऐसी रचना है। जिसके स्नेह, वातसल्य व ममत्व की छाँव को भगवान भी तरसता है।

(ii) एक चुप–सा रोना : – प्रस्तुत कविता पति–पत्नी के दाम्पत्य जीवन की एक सुन्दर झांकी प्रस्तुत करती है। पारिवारिक सम्बंधों के अन्तर्गत पति–पत्नी का रिश्ता बहुत अहम होता है, जिसे दो आत्माओं का रिश्ता भी कहते हैं। इस रिश्तें में पत्नी की भूमिका सर्वोतम होती है। पत्नी जहाँ पारिवारिक दायित्वों को निभाती हैं,

वहाँ अपने पति के हर सुख–दुःख में बराबर का साथ देती है। एक सच्ची मार्गदर्शिका बनकर अपने पति का मार्गदर्शन करती है। स्त्री के बिना मनुष्य के अधूरेपन की भरपाई कोई नहीं कर सकता है। उदाहरणस्वरूप–

मेरी पत्नी ने कहा
एक दिन मुझे
जब मैं नहीं रहूँगी
इस दुनिया में
तब तुम्हारा
क्या हाल होगा
उस समय मैं
पक्षी बन गया
कुछ देर के लिए
मैं चिल्लाया नहीं
पर रोता रहा
भीतर ही भीतर।''[6]

इस प्रकार प्रस्तुत कविता मानव जीवन में एक स्त्री की उपयोगिता को सिद्ध करती है। स्त्री केवल परिवार की ही नहीं अपितु समाज की भी धूरी होती है जो परिवार व समाज को आपस में जोड़ती है।

(iii) प्रेम का एक दरिया :– 'प्रेम का एक दरिया' शीर्षक कविता एक स्त्री के सात्विक व निश्छल प्रेम की अभिव्यक्ति है। सृष्टि के प्रारम्भ से ही स्त्री अपना सर्वस्व मनुष्य पर लुटाती आ रही है। परिवार के दायित्वों का निर्वाह करते–करते अगर उसे अपना बलिदान भी देना पड़े तो वह हिचकचाती नहीं है। सेवा, समर्पण, सहनशीलता नारी गुणों के तीन रत्न हैं। जो एक स्त्री को देवी के समान पूज्नीय बनाते हैं। नारी के उदात्त प्रेमभाव का उदाहरण कवि के कथ्य में इस प्रकार हैं–

''मैंने देखा है बहुत निकट से
वे शुद्ध मन से
लिपट जाना चाहती है
मुझसे अपना
सब कुछ करके समर्पित।''[7]

(iv) सदा रहते हो मेरे पास :– प्रस्तुत कविता स्त्री–पुरूष के निस्वार्थ प्रेम की सफल गाथा है। निश्छल और सात्विक प्रेम में पाने–खोने की कोई गुंजाईश नहीं होती है। सात्विक प्रेम में स्त्री–पुरूष अपना सर्वस्व समर्पित करने को लालायित रहते हैं। सांसारिक प्रेम के अन्तर्गत पति–पत्नी का रिश्ता बड़ा नाजुक होता है। दोनों की आदतें, विचार एक दूसरे को बहुत प्रभावित करते हैं। इसलिए पति–पत्नी की आदतों व विचारों में तालमेल होना बहुत जरूरी होता है। यदि दोनों में उचित तालमेल है तो जिन्दगी स्वर्ग जैसी लगने लगती है और अगर तालमेल का अभाव है तो दोनों की जिन्दगी बोझ लगने लगती है। प्रस्तुत कविता में भी इन्हीं भावों की अभिव्यक्ति हुई है–

खाई थी कसम
हम न होंगे
एक दूसरे से नाराज कभी
न होंगे कभी दूर
x x x x
न हुई कभी लड़ाई
न रोना, न रूलाई
बीत गई जिंदगी
प्रेम के स्त्रोत में
नहाते–नहाते।''[8]

उपरोक्त पंक्तियाँ पति–पत्नी के मधुर सम्बंधों की मिठास को प्रकट करती हैं। स्त्री पारिवारिक सम्बंधों के दायित्व में अपना अतुलनीय योगदान देती है।

(ग) 'दुनियाभर की गिलहरियाँ' काव्य–संग्रह में स्त्री–विमर्श

रूपदेवगुण प्रकृति हृदय सम्पन्न कवि हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रकृति की गोद में ही बीत रहा है। वे प्रकृति को माँ, बहन, पत्नी, प्रिया, पुत्री आदि के रूप में चित्रित करते हैं। प्रकृति चित्रण के प्रति उनका दृष्टिकोण भिन्न–भिन्न रहा है। आलम्बन व उद्दीपन के साथ–साथ प्रकृति के मानवीय व संदेशदात्री रूप को भी परिलक्षित किया है। प्रस्तुत काव्य संग्रह में कवि ने मानवीय संवेदनाओं को प्रकृति के बिम्बात्मक रूप में चित्रित किया है। कवि ने स्त्री–विमर्श के अन्तर्गत नारी की भावनात्मक व संवेदनात्मक स्थिति को बड़ी बारीकी से प्रस्तुत किया है। जिसका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है–

(i) बिखर गया है आशियाना :– 'बिखर गया है आशियाना' शीर्षक कविता में विदेशी चकाचौंध में बहके युवक देश छोड़कर विदेशों में जा बसे हैं और पीछे छोड़ गए बुजुर्गों की व्यथा को प्रकट किया गया है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव तथा पैसों के लालच ने देश के नवयुवकों को अपने आकर्षण के जाल में फंसा लिया है। आज हर नवयुवक देश छोड़कर विदेश जाने को लालायित है। प्रस्तुत कविता में कवि ने वृक्ष पर बने एक पक्षी के घोंसले जो आंधी के कारण बिखर जाता है, के माध्यम से घर छोड़कर विदेश में बसे एक बेटे की माँ की पीड़ा को वाणी दी है। उन पक्षियों की भान्ति वह बुढ़िया औरत भी बेसहारा व लाचार हो गई है। उसकी देख–रेख करने वाला, खास–खबर लेने वाला अब कोई नहीं रहा है। यथा–

''एक बुढ़िया
आती रहती है मेरे पास
बार–बार दोहराती है
इसी शहर में
रहता है मेरा बेटा
और उसका परिवार
मैं अकेली यहाँ
रह रही हूँ
खाने को पड़ता है
मुझे घर....।''[9]

उपरोक्त पँक्तियाँ एक बेबस, लाचार, बेसहारा, दीनहीन बुढ़ी औरत की करूण गाथा को प्रकट करती हैं।

(ii) अकेली बुढ़िया की तरह :– 'अकेली बुढ़िया की तरह' शीर्षक कविता में कवि ने प्राकृतिक चित्रण के अन्तर्गत काली अन्धेरी सर्दी की रात की तुलना एक वृद्ध औरत से की है। जिस प्रकार सर्दी की रात में सभी प्राणी, जीव–जन्तु, पशु–पक्षी अपने–अपने घरों में ढुबक कर सो जाते हैं। सर्दी की काली रात अकेली भड़काती रहती है। कोई उसका सानी–साथी नहीं बनता, उसी प्रकार जब कोई औरत वृद्धावस्था में आती है तो घर पर बोझ लगने लगती है। घर वाले उसे बेकार की वस्तु समझकर बरामदे में पटक देते हैं। जिससे वह

अपनी व्यथित जिन्दगी जीते जीते उसे भी अपना जीवन काली भयंकर सर्दी की रात की तरह अंधकारमय प्रतीत होता है। प्रस्तुत कविता की निम्न पंक्तियाँ बुजुर्ग औरत की व्यथा को चित्रित करती हैं–

सब लोग सोने लगे हैं अन्दर
रजाइयों में
दुबके हुए
और वह अकेली
सह रही है
सब कुछ
बरामदे में सोई अकेली
बुढ़िया की तरह।''[10]

उपरोक्त पंक्तियाँ बुजुर्गों की दयनीय स्थिति को उजागर करती हैं। आज की जनरेशन को बुजुर्ग बिल्कुल भी नहीं सुहाते हैं।
वे बुजुर्गों को बोझ समझने लगते हैं। इसलिए चाहे गर्मी हो या फिर भयंकर सर्दी उन्हें बरामदे में रहने के लिए विवश होना पड़ता है और ये बुजुर्ग पालतु कुत्ते के समान घर की रखवाली के लिए बरामदे में पड़े–पड़े अपनी बची बाकी की जिन्दगी बिता देते हैं।

(iii) औलाद जब अच्छी न निकलेः– प्रस्तुत कविता में भौतिक चकाचौंध में डुबे आज लापरवाह युवावर्ग को लेकर माता–पिता की चिन्ता को उजागर किया गया है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण आज का युवा वर्ग अपने दायित्वों व कर्तव्यों के प्रति लापरवाह हो गया है। उसे न माता–पिता की चिन्ता है और न ही घर–परिवार की चिंता है। प्रस्तुत कविता इसी व्यथा को प्रकट करती है। कवि की कल्पना शक्ति बड़ी गजब की है। प्राकृतिक उपमानों के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को प्रकट करना कवि की लेखनी की विशिष्टा को दर्शाती है। कवि स्वयं प्रकृति की गोद में पला है। प्रकृति की हर वस्तु से उसे बेहद लगाव है। यही कारण है कि वह प्रकृति चित्रों को बड़ी सहजता से मनुष्य के साथ जोड़ता है। प्रस्तुत कविता ईद के चाँद के समान जिन्दगी और जीवन से लापरवाह रमुआ की माँ की व्यथा को प्रकट करती है। अपनी संतान के बिगडैल रवैया का प्रभाव माँ के जीवन को किस प्रकार प्रभावित करता है। इसका स्पष्ट उदाहरण इस प्रकार है–

बहुत दुखी है
रमुआ की माँ
फिक्र के कारण
दुबली हो गई है
काली पड़ गई है
औलाद जब अच्छी न निकले
तो ऐसा ही होता है
रात के साथ
माँ के साथ।''[11]

उपरोक्त पंक्तियाँ एक माँ का अपनी सन्तान के प्रति चिंता के भाव को प्रकट करती हैं। माँ हमेशा से अपने बच्चों के भविष्य को संवारने में अपना सारा जीवन दाव पर लगा देती है। लेकिन जब वही सन्तान बेकार, लापरवाह निकले तो फिक्र के कारण माँ का जीवन अति दुर्लभ हो जाता है।

(iv) घरों में गिरती रही हैं बिजलियाँ :– 'घरों में गिरती रही हैं बिजलियाँ' शीर्षक कविता पुरूष प्रधान समाज के द्वारा सदियों से शोषण की चक्की में पिसती, लुटती, पिटती स्त्री की करूणा गाथा को चित्रित करती हैं।
सृष्टि का संचार करने वाली है स्त्री, मनुष्य के वंश को चलाने वाली है स्त्री, घर–परिवार का पालन–पोषण व स्वर्ग बनाने वाली है स्त्री, फिर भी समाज में स्त्री के अस्तित्व को नकारा जाता है। वेश्यावृति के धन्धे में धकेला जाता है, मारा–पीटा जाता है आदि–आदि न जाने कितनी यातनाएँ सहनी पड़ती है। उदाहरणस्वरूपः–

''भ्रूण हत्या से मारी गई है लड़की
पैदा हो भी गयी तो
गली में कभी थाली नहीं बजती.....।''[12]

उपरोक्त पंक्यिों में दर्शाया है कि किस प्रकार लड़का होने पर उत्सव मनाया जाता है। लेकिन दुर्भाग्य से लड़की पैदा हो जाए तो थाली कभी नहीं बजाई जाती है। लड़का–लडकी का भेदभाव सदियों से चला आ रहा है। और आज भी हमारे समाज में लड़का–लड़की को लेकर संकीर्ण मानसिकता देखने को मिलती है।निम्न पंक्तियाँ भी नारी की दुर्दशा को प्रकट करती हैंः–

''किसी औरत को बुरी तरह से
पीटा है सास ने
तो किसी शराबी ने घर में
रखा है पाँव
और उसी पाँव से धक्के मार
गिराया है औरत को
किसी को जलाकर मार दिया गया है
युगों से आसमान से ही नहीं
घरों में भी गिरती
रही हैं बिजलियाँ।''[13]

इस प्रकार जग जननी सदियों से शारीरिक व मानसिक यातनाएं सहती चली आ रही है। कभी पत्नी के रूप में तो कभी पुत्री के रूप में, कभी माँ के रूप में तो कभी बहन के रूप में पीड़ित व शोषित होती आ रही है। माँ की कमी कवि को हमेशा खलती रही है। यही कारण है कि कवि के मन में नारी समाज के प्रति हमेशा से आदर व सम्मान का भाव रहा है।

(ध) एक बात पूछूँ काव्य–संग्रह में स्त्री–विमर्श
'एक बात पूछूँ' शीर्षक काव्य–संग्रह कवि की निजी अनुभूतियों का दस्तावेज है। कवि की निजी अनुभूतियाँ प्राकृतिक उपादानों की कल्पनाओं से मंडित हैं।
कवि की रचनाओं को पढ़ने से ऐसा लगता है मानो कवि की निजी अनुभूतियाँ प्रकृति के कण–कण में समाई हुई हैं। तभी तो कवि का मन प्रकृति में खूब रंगा है। नदियाँ, नाले, पर्वत, पहाड़, पेड़–पौधे आदि से कवि का प्रत्यक्ष वार्तालाप होता हैं। ये प्रकृति उपादान कवि के हर सुख–दुःख में, हर घड़ी में, हर दशा में, हर अवस्था में बराबर के भागीदार होते हैं। तभी तो कवि को प्रकृति की गोद माँ की गोद के समान प्रतीत होती है। प्रस्तुत काव्य–संग्रह में जब हम स्त्री–विमर्श की बात करते हैं तो कवि ने कहीं–कहीं उपरोक्त काव्य–संग्रह में नारी की स्थिति पर चर्चा की है। जिसका विस्तृत वर्णन इस प्रकार हैं–

(i) जीवन की भटकन :– 'जीवन की भटकन' शीर्षक कविता कवि

ने अपनी माँ को समर्पित की है। माँ का रिश्ता दुनिया के सब रिश्तों से सर्वोतम, सबसे बड़ा, सबसे पवित्र रिश्ता होता है। एक माँ ही होती है जो निःस्वार्थ भाव से अपने बच्चों व परिवार की सेवा करती है। माँ की ममता, वात्सल्य, स्नेह रूपी औषधी से बड़े से बड़े कष्ट, दुःख क्षण–भर में दूर हो जाते हैं। माँ की गोद में असीम सुख व सुकून की प्राप्ति होती है। प्रस्तुत कविता जीवन की भटकन वास्तव में माँ के बिना कवि के जीवन की भटकन हैं। कवि माँ के वात्सल्य, ममत्व व स्नेह से हमेशा वंचित रहा है। तभी तो कवि ने अपनी लघुकथाओं, कविताओं, कहानियों रूपी चिट्ठियाँ लिखकर अपनी माँ को समर्पित करता रहता है। प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि क इन्ही अनुभूतियों को प्रकट करती हैं।

''अच्छी चिट्ठियाँ
लिखने की
कोशिश में रहता हूँ
यह सोचकर
कि शायद उसे मेरी कोई चिट्ठी
बहुत अधिक
पसन्द आ जाए
तो मुझे
उसका उत्तर मिल जाए
और मैं माँ को पा सकूं।''[14]

उपरोक्त पंक्तियाँ कवि के हृदय में उत्पन्न माँ के प्रति अथाह प्रेम की सफल अभिव्यक्ति है। माँ का रिश्ता दुनिया का सबसे पाक पवित्र रिश्ता होता है। माँ के मुख से तो हमेशा सबके लिए सुख की बलैंया निकलती रहती हैं। अतः माँ का स्थान संसार में अन्य कोई रिश्ता नहीं ले सकता है।

वह प्रकृति में ही माँ, पत्नी, बहन, पुत्री आदि सभी को देखता है। सबसे ज्यादा कवि प्रकृति को माँ के रूप में देखता है। बचपन से ही माँ के ममत्व व वात्सल्य से वंचित कवि प्रकृति की गोद में ममता व स्नेह को प्राप्त करता है। कवि ने प्राकृतिक उपादानों के माध्यम से बिटिया, पत्नी, बहिन और माँ जैसे सुकोमल रिश्तों की संवेदनाओं को प्रकट किया है।

कवि ने अपने काव्य में जहाँ परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए नारी की पीड़ा को स्वर प्रदान किया है। वहीं समाज में नारी उपयोगिता व महत्ता को भी स्वीकार किया है। कवि ने नारी विमर्श के साथ–साथ मजदूर की पीड़ा, किसान की दुर्दशा के चित्रण को अपने काव्य का विषय बनाया है। धर्मार्थ काममोक्ष चतुष्फल के प्रति भी रूपदेवगुण सजग हैं। मानवीय रिश्तों की छवि को बड़ी सहजता से प्रस्तुत किया है। पारिवारिक चेतना का वर्णन कवि की लेखनी का प्रमुख विषय रहा है। वे परिवार को मानव समाज की मूल इकाई मानते हैं। परिवार के बिना समाज की कल्पना असम्भव है। मनुष्य का जन्म, विकास तथा संस्कृतीकरण परिवार से ही प्रारम्भ होता है। कवि प्रेम के पथिक हैं और प्रेम से ही पारिवारिक व्यवस्था को जोड़ने के पक्षधर रहे हैं। अतः कवि ने मानवीय संवेदनाओं के साथ–साथ अपनी कविताओं में राष्ट्र–प्रेम, कर्त्तव्यपरायणता, विश्व बन्धुत्व की भावना, लोक मंगल की भावना, प्रेमाभिव्यक्ति, संक्रमित, विघटित व परिवर्तित मूल्य, संबंधों में खोखलापन, विकृत मानसिकता, पीढ़ियों में परम्परागत व वैचारिक मतभेद, बढ़ती स्वार्थवृति आदि जैसे चिन्तनशील विषयों को चित्रित किया है।

संदर्भ

1. तुम झूठ मत बोला करो, रूपदेवगुण, पृ. 105
2. तुम झूठ मत बोला करो, रूपदेवगुण, पृ. 105–106
3. आपके बगैर बहुत उदास है. पृ 110
4. आपके बगैर बहुत उदास है. पृ 110
5. तुम अपना रखा करो ख्याल, रूपदेवगुण, पृ. 12
6. यह चुप–सा रोना, रूपदेवगुण, पृ. 15–16
7. प्रेम का एक दरिया, रूपदेवगुण, पृ. 27
8. सदा रहते हो मेरे नजदीक, रूपदेवगुण, पृ. 100–101
9. बिखर गया है आशियाना, रूपदेवगुण, पृ. 18–19
10. अकेली बुढ़िया की तरह, रूपदेवगुण, पृ. 75
11. औलाद जब अच्छी न निकले, रूपदेवगुण, पृ. 77–78
12. घरो में गिरती रही है बिजलियाँ, रुपदेवगुण, पृ. 79
13. घरो में गिरती रही है बिजलियाँ, रुपदेवगुण, पृ. 80
14. जीवन की भटकन, रूपदेवगुण, पृ. 32–33